हिलजात्रा : एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत

डॉ0 ज्योति टाम्टा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास
एम0बी0पी0जी0कालेज
हल्द्वानी, नैनीताल

सार – संक्षेप

भारत एक समृद्वशाली देश है। भारतीय सस्कृति को अपनी गौरवमयी और वैभवशाली परम्पराओं के कारण विश्व में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। भारतीय सस्कृति आदिम काल से वर्तमान समय तक विभिन्न काल खण्डो के नूतन अवदानो को ग्रहण करने के पश्चात भी यह अपने मौलिक स्वरूप में ख्याति स्थापित करने में सक्षम रूप में खडी है। सस्कृति शब्द अति व्यापक है। सस्कृति में क्षेत्र विशेष की लोक कलाओं, लोक संगीत,स्थानीय उत्सव,भाषा ,बोली ,आचार ,विचार,आम जन मानस के मानोभाव व विचार और सृजनात्मक क्रियाकलापों को समाहित कर साहित्य, कला, दर्शन की दिशा में विचरण करती है। सस्कृति के विभिन्न तत्वों को ऐतिहासिक विरासत के धरोहर के रूप में दिखाई देते है। ऐसे ही ऐतिहासिक संस्कृतिक धरोहर के रूप में उत्तराखण्ड की हिलजात्रा उल्लेखनीय है जो आज भी प्राचीन संस्कृतिक विरासत को जीवंत रखे हुये है।

कुंजी शब्द – समृद्वशाली, सस्कृति, नूतन, अवदानो, हिलजात्रा

प्रस्तावना

भारत भगौलिक विविधाओ का देश है। कहीं आकाश छूते हिमालय ,कहीं गहरा समुन्द्र,कहीं रेतीली भूमि और कहीं उपजाऊ भूमि है। इन विविधाओ में ही स्कन्दपुराण में हिमालय के पॉच खण्ड बताये है। जिसमें उत्तराखण्ड मध्य हिमालय क्षेत्र में स्थित राज्य है। वेद ,पुराण ,महाभारत,रामायण तथा अनेक साहित्यों में उत्तराखण्ड राज्य का विवरण मिलता है। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में उत्तराखण्ड का उल्लेख केदारखंड और मानसखण्ड के रूप में मिलता है। स्थानीय लोक कथा के अनुसार पांडव यहाँ आये थें । प्राचीन धर्मग्रन्थों में उत्तराखण्ड को केदारखंड और मानसखण्ड के रूप में जाना जाता हैं। यह राज्य विभिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता लिये हुये है। इसका एक समृद्व इतिहास रहा है। उत्तराखण्ड राज्य को देवभूमि भी कहा जाता है। यह ऋषि मुनियो की तपस्या और साधनास्थलीय भी है। वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में गंढवाल और कुमाऊँ दो कमिश्नरी है। 1790 से पहले कुमाऊँ क्षेत्र पर चंद्र राजवशं का शासन और गंढवाल पर परमार राजवंशो का शासन था। 1790- 91 के दौरान गोरखाओं के हमले के बाद कुमाऊँ गंढवाल का पूरा क्षेत्र गोरखाओ के अधीन में आ गया। 1815 के समझौते के बाद गंढवाल और कुमाऊँ गंढवाल का पूरा क्षेत्र पर अंग्रेजो का शासन शुरू हो गया।

उत्तराखण्ड राज्य के पूर्वोतर सीमांत में पिथौरागंढ जिला अपनी विशेष स्थिति के कारण महत्वपूर्ण है। बास्ते अभिलेख से ज्ञात होता है। कि पिथौरागढ का प्राचीन नाम सोरघाटी है। सोर का अर्थ है – सरोवर । ऐसा माना जाता है कि इस घाटी में सात सरोवर थे। सरोवर में पानी सूखने से इस स्थान में पठारी भूमि का जन्म हुआ। जिससे इसका नाम के पिथौरागंढ पडा। पिथौरागंढ के विषय में अलग अलग किन्दवती हैं। ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि उत्तराखण्ड में सर्वप्रथम कुणिन्द राजाओं ने राजनीतिक शासन स्थापित किया था। कुणिन्द राजाओं के समकालीन खस राजवंश ने सोर घाटी में अपना राजनीतिक शासन स्थापित किया था। इसलिए खस राजवंश को पिथौरागढ में शासन करने वाला प्रथम राजवंश कहा जाता है। स्त्रोतो से ज्ञात होता है कि खस राजवंश ने पिथौरागढ में ऋग्वेद काल से लेकर 12 वी शताब्दी तक शासन किया। खस राजवंश के शासकों ने पिथौरागंढ में किलों (कोट) का निमार्ण करवाया । खसों द्वारा बनवाये गये उदयकोट,भाटकोट और डूंगरकोट प्रमुख किले है।

कुमाऊँ में लगभग 1025 ई0 के लगभग राजा सोम चद्रं ने चम्पावत में अपनी राजधानी स्थापित कर चद्रं वशं साम्राज्य की स्थापना की। सोम चद्रं एक माडंलिक राजा था। जो नेपाल के राजा के अधीन था। चद्रं शासको में से ही एक शासक वीणा चंद्र था, जो भोग विलासी था जिसके कारण खस शासकों ने कुछ समय के लिऐ चम्पावत पर भी शासन किया। वही दूसरी तरफ नेपाल में 1191 ई0 में मल्ल वंश का शासन था। गोपेश्वर – त्रिशूल लेख से पता चलता है कि वीर चंद्र ने अशोक चल्ल की सहायता से खस राजाओं को पराजित किया था और अशोक चल्ल ने मल्ल वंश की स्थापना की थी। 1365 ई0 में कुमाऊँ की गद्दी में राजा ज्ञान चंद्र बैठा और उसने मल्ल शासकों को पराजित कर सोर व सीरा क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। 14 वी शताब्दी में कचुडी वंश के राजाओं का उदय हुआ। कचुडी वंश के राजाओं ने अपना राज्य अस्कोट तक फैला दिया था।

एटकिंसन के अनुसार, सोरघाटी नेपाल के पाल शासको के अधीन भी रही थी। स्थानीय चंद्र शासको ने पाल शासको के खिलाफ विद्रोह किया। जिसके परिणामस्वरूप पाल तथा चंद्र राजवंशो के बीच युद्व भी हुआ। यह युद्व तीन पीढियों तक चलता रहा । अन्तत चंद्र वशं के शासक पिथोरा चंद्र ने पाल शासको को हरा कर पिथौरागढ के शासक बने। एक अन्य स्त्रोत के आधार पर चंद्र शासको के काल में रत्न चंद्र ने नेपाल के राजा दोती को परास्त कर सोर घाटी पर कब्जा कर लिया। एटकिंसन के अनुसार चंद्र वशं के सामंत पीरू भाई गोसाई ने ही पिथौरागंढ किले की स्थापना भी की। जिस कारण किले के नाम पर इसका नाम पिथौरागंढ पडा। एक अन्य स्त्रोत के अनुसार पिथौरागंढ के महान शासकों मे राय पिथौराशाही राजा का नाम आता है। सम्भवतः इनके नाम पर ही बाद में इस क्षेत्र का नाम पिथौरागंढ पडा।

सन् 1669 ई0 में बाज बहादुर के ताम्र लेख में पिथौरागढ का नाम वादिल्या देश मिलता है। बाज बहादुर ने हथिया देवाल में मदिंर का भी निमार्ण कारवाया था। मूनाकोट के ताम्रपत्र लेख से ही चंद्र शासको के करों से संबंधित तथ्यों का उल्लेख मिलता है। 1790 ई0 में अतिम चंद्र शासक महेन्द्र चंद्र और गोरखो के मध्य युद्व हुआ । जिसमें चंद्र शासक महेन्द्र चंद्र पराजित हो गये थे, और कुमाऊँ पर गोरखों का अधिकार हो गया। गोरखों ने पिथौरागढ में सिमलगए दुर्ग का निमार्ण करवाया था।

उत्तराखण्ड राज्य पर अलग अलग समय पर विभिन्न राजवंशों ने शासन किया। उत्तराखण्ड राज्य का पिथौरागंढ जिला प्राकृतिक सौन्दर्य और खूबसूरत पहाडियों से घिरा नगर हैं। यह अपनी प्राकृतिक खूबसूरती के साथ लोक परंपराओ के लिए भी प्रसिद्व है। प्रत्येक प्रान्त के कुछ विशिष्ट लोकोत्सव व प्रथायें होती है, जो उस क्षेत्र के महत्वपूर्ण अंग होने के कारण वहाँ के निवासियों की अस्मिता की पहचान बन जाती है। देवभूमि उत्तराखण्ड भी अपने लोक नृत्य, लोक जात्रा और लोक त्यौहारों के लिए पूरे देश में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इन्ही लोक जात्रा या लोक नृत्य में से एक अति रोंमाचकारी जात्रा है हिलजात्रा। हिलजात्रा का आरम्भ उस समय की भी याद दिलाता है ,जब मानव आदिम अवस्था में था।

हिलजात्रा उत्तराखण्ड के सीमावर्ती क्षेत्र सोर घाटी (पिथौरागढ में) में मनाया जाने वाला लोकप्रिय लोकोत्सव है। हिलजात्रा का आरम्भ नेपाल से हुआ था । हिलजात्रा के सम्बध में विभिन्न किंदवती है। ऐसा माना जाता है, कि नेपाल के राजा ने कुमाऊॅ के चार महर भाइयों की वीरता से प्रभावित होकर उनको यह जात्रा भेंट की थी । शिव पुराण के अनुसार हिल जात्रा का प्रमुख पात्र लखियाभूत है। जिसे शिव के प्रमुख गण वीरभद्र का अवतार माना जाता है। वीरभद्र शिव की जटा से प्रकट हुआ था। शिव के गण होने के कारण प्रतिवर्ष यह जात्रा की जाती है। लखियाभूत की चतुराई और वीरता के किस्से कहानियाँ आज भी कुमाऊँ व नेपाल के क्षेत्रों में प्रचलित है। नेपाल के शासकों ने इस जात्रा में काम आने वाले विभिन्न मुखौटे विशेष कर लखिया भूत के मुखौटे तथा हल इत्यादि वस्तुऐं भी दी थी। जिसे लेकर ये चारो भाई कुमाऊँ में स्थित पिथौरागंढ लौट आये और तब से पूर्ण उत्साह और श्रद्वा के साथ यह उत्सव कुमौड गांव में हिलजात्रा के नाम से मनाया जाता है। इस लोकोत्सव में मूक अभिनय के द्वारा लोकनाट्य प्रस्तुत किया जाता है। हिलजात्रा मे ंचंरागाह एंव कृषि कार्यो से संबधित गतिविधियों वाला स्वांग नृत्य किया जाता है। लोग

सुख और समृद्वि की कामना के साथ ही कृषि से जुडी सारी गतिविधयो को अभिनय के माध्यम से लोगों को परिचित करने का प्रयास करते है।

हिलजात्रा में लखिया भूत की उपासना की जाती है, स्थनीय लोगों में विश्वास है कि लखिया भूत की उपासना से किसी प्रकार की विपदा क्षेत्र में नही आती है। लखिया भूत को शिव जी के गण वीरभद्र का अवतार माना जाता है। हिलजात्रा दो शब्दो से मिलकर बना है। हिल अर्थात कीचड व जात्रा अर्थात यात्रा । हिलजात्रा वर्षाकाल में मनाया जाने वाला उत्सव है। वर्षाकाल के अन्तिम समय कृषि कार्य यथा रोपाई व गुडाई समाप्त हो जाती हैं। खेतों में फसल लहराने लगती है। लहराती फसलो केा देख कर किसान के मन में प्रसन्ता और उत्साह की भावना होती है। ऐसे समय में हिलजात्रा उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इतिहासकारों के अनुसार हिलजात्रा की पंरम्परा दौ सौ साल से भी ज्यादा समय से चली आ रही है।

हिलजात्रा गौरवपूर्ण अतीत व समृद्वशाली संस्कृति को भविष्य से जोडनें का ऐतिहासिक पुल है। हिलजात्रा उत्सव में स्वस्थ मनोरंजन का भाव तो छिपा ही होता है साथ में यह शिव और पार्वती की उपासना का लोक पांरपरिक तरीका भी है। हिमालय क्षेत्र को शिव की भूमि माना जाता है। हर उत्सव में शिव के रूपों का ही पूजन किया जाता है।

जटाटवीगलज्ज्लप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितो भुजडतुडमालिकाम्।
डम।।म।।मत्रिनाव।।मर्वयं
च्कार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।

अर्थात जिन्होंने जटारूपी अटवी वन से निकलती हुई गंगा जी के गिरते हुऐ प्रवाहों से पवित्र किये गये गले में सर्पो की लटकती हुई विशाल माला को धारण कर ,डमरू के डम– डम शब्दो से मण्डित प्रचड ताण्डव नृत्य किया वे शिव जी हमारे कल्याण का विस्तार करें।

वर्तमान में कुमौड गांव के अतिरिक्त अन्य शहरो के निकटवर्ती गांवो में भी यह उत्सव भव्य रूप से मनाया जाता है। इस उत्सव में ग्रामीणों द्वारा सर्वप्रथम लाल झंडो को लेकर ढोल नगाडे व बाजो के साथ कोट का चक्कर लगाया जाता है। हिलजात्रा मे मुखौटा पहन कर ही सारे कार्यक्रम होते है। हिलजात्रा के मुख्य पात्र लखिया भूत मुखौटा ,काले वस्त्र कमर में 12 किलो वजन की पीतल घटियां,घुघंरू का कमर बंद गले में रूद्राक्ष की मालाएं पीतल की कण्ठमाला फूलो की माला हाथ में चौर गााय की पूछं से बनी चवंर धारण कर लोगो को आर्शीवाद देते है। लखिया भूत का श्रृंगार नीले, काले, सफेद व लाल सहित कई रंगो से किया जाता है।

लखिया भूत के अवतार के समय पूरा मैदान ढोल नगाडों शंख घटीयों की पवित्र व मधुर ध्वनि से भक्तिमय हो जाता है। यह क्षण अत्यन्त रोमंचकारी होता हैं। लखिया भूत का अवतार लेने वाले पात्र को सुबह से उपवास रखना होता है। लखिया भूत के अवतार के समय पात्र को गंगा जल से स्नान कराया जाता है, और उसे फूल तथा अक्षत चढाए जाते है। लखिया भूत के गणों को भी उपवास रखना होता है। लखिया भूत को दो गणों के द्वारा 25 किलो वजनी लोहे की चैन से थामा जाता है, और जैसे ही भूत प्रकट होता है, वैसे ही सभी पात्र लखिया भूत के पीछे आ जाते है।

लखिया भूत के प्रकट होने से पूर्व ग्रामिणों के द्वारा लाल झंडो को लेकर गाजे बाजे व नगाडो के साथ कोट का चक्कर लगया जाता है। उत्सव में ढोल, नगाडे, हुडका व मंजीरो के संगीत और नृत्य करते कलाकार, बैलो के जोडियों, छोटा बल्द ,बडा बल्द (कुमाऊँनी भाषा में बल्द को बैल कहा जाता है) ,अडियल बैल, हिरन ,चीतल, भालू ,धान की रोपाई का स्वांग करती हुई महिलाओं,कमर में खुकुरी और हाथ में दंड लिए रंग– बिरंगे वेश में पुरूष के द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जातें है।

पिथौरागंढ क्षत्रिय बाहुल्य क्षेत्र है तथा यह जात्रा भी क्षत्रियों द्वारा मनाई जाती है। शिव के गण लखिया भूत की इस पुण्यात्मक यात्रा का श्रद्वालुओं के द्वारा आन्नद लिया जाता है। लखिया भूत के अवतार की रोमांचक घटना दर्शकों कों मोह लेती है। शिव के गणों के दर्शन करके श्रद्वालुओं को अलौकिक शातिं प्राप्त होती है।

कुमौड के अलावा यह उत्सव पिथौरागढ के अस्कोट, देवलथल और कुछ अन्य गांव में भी मनाया जाता है। कृषि पर आधारित यह लोकपर्व आस्था और संस्कृति का प्रतीक होने के साथ मनोरंजन का भी साधन है। आज भी सातू आठू से आरम्भ होने वाले इस पर्व के प्रति शहरी और ग्रामीण किसी का भी लगाव कम नही हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1.दिनेश चंद्र बलूनी , उत्तरांचल सस्कृति लोक जीवन इतिहास एंव पुरातत्व, प्रकाश बुक डिपो ।

2.जोशी आशा, पिथौरागंढ का इतिहास, बजेटी परिसर पिथौरागंढ।

3.पाण्डे बद्री दत्त ,कुमाऊँ का इतिहास , अल्मोडा बुक डिपो अल्मोडा ।

4.सिंह यशवंत, उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास।

5.पोखरियाल देव सिंह कुमायूनी भाषा ,साहित्य एंव संस्कृति अल्मोडा बुक डिपो अल्मोडा

6.पाण्डेय अशोक कुमार उत्तराचंल सम्पूर्ण अध्ययन उपकार प्रकाशन आगरा।

7. उनियाल हेमा ,मानसखण्डः कुमाऊँ का इतिहास, धर्म, संस्कृति, वास्तुशिल्प एंव पर्यटन उत्तरा बुक डिपो 2014

8.वैष्णव यमुना दत्त, कुमाऊँ का इतिहास ,मार्डन बुक डिपो द माल नैनीताल ।

9.नैथानी शिव प्रसाद, उत्तराखण्ड के तीर्थ एंव मंदिर, पार्वती प्रकाशन,श्रीनगर गढवाल।

10.बिष्ट शेरसिंह ,कुमाऊँः हिमालय समाज और सस्कृति, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी।